P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-11* July- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजकीय माध्यमिक विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय के छात्र छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन

जगदम्बा सिंह
शोध छात्र,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया वि0 विद्यालय,
उदयपुर

सारांश

वर्तमान युग तकनीकी का युग है। आज किसी भी क्षेत्र की प्रगति का अनुमान उसकी तकनीकी प्रयोग की क्षमता से लगाया जा सकता है और तकनीकी विकास उनके नवाचारो के प्रयोग पर आधारित है। विज्ञान के अनुसंधानों एवं अविष्कारों से ज्ञान के सभी क्षेत्रों में महान विकास हुआ है ज्ञान के विविध क्षेत्रों में विज्ञान की जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन है विषयो का वैज्ञानिक रीति से अध्ययन और विवेचन, बालक अब निष्क्रीय श्रोता नही रहा है और न शिक्षा ही अब निष्क्रिय, अरूचिपूर्ण रह गयी है। अब शिक्षा बालक केन्द्रित हो गयी है। शिक्षा प्रदान करते समय शिक्षक का यह प्रमुख दायित्व है कि वह बालक की शारीरिक, मानसिक शक्तियों, योग्यताओं, रूचियों और रूझान का अध्ययन करके ही बालक की क्षमताओं के अनुकूल ही उसे शिक्षा प्रदान करे। शिक्षा में कम्प्यूटर का उपयोग शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श हेतु किया जाने लगा है। यह दूरस्थ शिक्षा में अध्ययनरत् छात्रों के लिए भी बहुत उपयोगी है। ई–लर्निंग शिक्षा में एक क्रान्तिकारी कदम है। यह बड़ी मात्रा में आंकड़ो की खोज करने में सहायक होता है।

मुख्य शब्द : औद्योगिक एंव तकनीकी विकास, कम्प्यूटर शिक्षा

प्रस्तावना

मानव इतिहास के उदय से लेकर अब तक शिक्षा ने विकास तथा अभिवृद्वि की प्रकिया को सातत्य प्रदान किया है। हर देश में अपनी सामाजिक सांस्कृतिक पहचान बनाने के लिए अपनी शिक्षा प्रणाली विकसित की और समाज की चुनौती को स्वीकार किया।

स्वतंत्र भारत की शिक्षा नीति ने एक कदम उठाया और उसने अपना उद्देश्य राष्ट्रीय प्रगति, सामान्य नागरिकता तथा संस्कृति की भावना और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ि करना माना।

सभी स्तरो पर शिक्षा में गुणात्मक सुधार, विज्ञान तथा तकनीकि पर विशेष ध्यान, नैतिक मूल्यों के विकास तथा शिक्षा और जीवन के पारस्परिक सम्बन्धो को घनिष्ठ बनाने पर बल दिया।

राजकीय माध्यमिक विद्यालय सभी राज्यों के प्रत्येक जिले में है। इनका संचालन राज्य सरकार द्वारा समय समय पर विभिन्न परिवर्तनो के साथ होता रहता है इनकी शिक्षा का माध्यम हिन्दी एवं अग्रेजी भाषा के साथ साथ क्षेत्रीय भाषा में भी होता है।

इन विद्यालयों में छठवी से ंदसवी तक की शिक्षा दी जाती है। विभिन्न धर्मो पर आधारित माध्यमिक विद्यालय भी है। ये माध्यमिक विद्यालय अलग अलग बोर्डो से सम्बद्ध रहते है। प्रत्येक राज्य का अपना एक बोर्ड होता है।

देश के सभी प्रान्तो के सभी जिलो में एक एक नवोदय विद्यालय की स्थापना की सिफारिश राष्ट्रीय शिक्षा नीति में की गयी । इन विद्यालयों की स्थापना के लिए प्रान्तीय सरकारो को 35 एकड़ भूमि प्रति विद्यालय उपलब्ध करानी होती है, ये विद्यालय आवासीय, सह शिक्षा और निःशुल्क होगे। यू तो शिक्षा अपने में उत्तम निवेश है,परन्तु प्रतिभावान बच्चों की शिक्षा पर किया गया व्यय अधिक उपयोगी होता है।

नवोदय विद्यालय ग्रामीण अंचल क्षेत्रों में प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विना उनकी आर्थिक स्थिति पर विचार किये उच्चस्तर की आधुनिकतम शिक्षा प्रदान करेगे।

2012 तक देश के 34 प्रान्तों और केन्द्र शासित प्रदेशों में 586 जवाहर नवोदय विद्यालयो की स्थापना की जा चुकी थी।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-11* July- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

इन विद्यालयों में प्रतिवर्ष 34000 से अधिक छात्र छात्राओं को प्रवेश दिया जाता है।

समस्या कथन

राजकीय माध्यमिक विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय के छात्र छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन के उददेश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित शोध उददेश्य है–

1. राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि का अध्ययन करना।
2. नवोदय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि का अध्ययन करना।
3. राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. नवोदय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. राजकीय माध्यमिक विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने शून्य परिकल्पना का सहारा लिया है–

राजकीय माध्यमिक विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय के छात्र छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध समस्या का सीमांकन

प्रंस्तुत शोध में अध्ययन का सीमांकन निम्नलिखित प्रकार से किया गया है।

1. प्रस्तुत अनुसंधान करौली एवं दौसा जिले तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अनुसंधान में न्यादर्श के रूप में 200 छात्र छात्राओं को चयनित किया गया है।

सारणी– 1

क्रं. सं.	विद्यालय का नाम	कुल संख्या	छात्र	छात्राए
1	राजकीय मा. विद्यालय करसौली	50	25	25
2	राजकीय मा. वि. महुआ	50	25	25
3	नवोदय वि0 खेड़ली	50	25	25
4	नवोदय वि0 करसौली	50	25	25
	कुल योग	200	100	100

शोध में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध की न्यादर्श विधि

प्रस्तुत अनुसंधान हेतु यादृच्छिक न्यादर्श एवं उददेश्य पूर्ण न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत शोध में विद्यालयों का चयन करने के लिए यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया। विद्यालयों का चयन करने के लिए सर्वप्रथम करौली एवं दौसा जिले के रा0मा0वि0एवं नवोदय वि0 की सूची प्राप्त की। शोधकर्ता को चार विद्यालयों का चयन करना था। इन विद्यालयों का चयन लाटरी विधि से किया गया। इस विधि के अन्तर्गत इच्छित क्षेत्रों में पड़ने वाले विद्यालयों के नाम कागज की पर्चियों पर लिखकर एक बर्तन में ड़ालकर छात्र की आँख पर पट्टी बाँधकर बर्तन से पर्ची निकालने को कहा गया प्राप्त पर्ची के आधार पर विद्यालय का चयन कर लिया गया। ये विद्यालय इस प्रकार है–

1. रा0मा0वि0करसौली।
2. रा0मा0 वि0 महुआ ।
3. नवोदय वि0 खेड़ली।
4. नवोदय वि0करसौली।

शोध में प्रयक्तु उपकरण

शोध उपकरण के रूप बोगार्डस द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

शोध कार्य में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य में मूल आंकड़ो का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन, क्रातिक अनुपात निकाला गया।

प्रस्तुत अनुसंधान रा0मा0वि0 के 100 (50–50) छात्र छात्राओं को एवं नवोदय विद्यालय के इतने ही छात्र छात्राओं को अनुसंधान में सम्मिलित किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण

तालिका संख्या – 2

रा0 मा0 वि0 के छात्र–छात्राओं के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य का विवरण

प्रतिदर्श	सख्या	मध्यमान	मनक विचलन	मध्यमान का अन्तर	मानक त्रुटि	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर	सारणीयन मान	परिणाम
छात्र	50	28.0	6.13	2.0	1.39	1.43	0.05	0.05= 1.98	0.05 पर असार्थक
छात्राएं	50	30.0	7.69						

सारणी सं0–2 से स्पष्ट होता है कि रा0मा0वि0 के छात्रों का मध्यमान 28.0 तथा मानक विचलन 6.13 एवं रा0मा0वि0 के छात्राओं का मध्यमान 30.0 एवं मानक विचलन 7.69 पाया गया तथा इनके मध्य टी मूल्य का मान 1.43 प्राप्त किया गया जबकि सारणीयन 1.98 सार्थकता स्तर 0.05 एवं सारणीयन मान 1.98 पाया गया

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-11* July- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जो यह बताता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नही है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया गया।

तालिका संख्या – 3

नवोदय विद्यालय के छात्र छात्राओं का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य का विवरण मूल्य का विवरण

प्रतिदर्श	संख्या	संख्या	मध्यमान	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी परीक्षण मान	सार्थकता स्तर	सारणीयन मान	परिणाम
छात्र	50	33.0	8.04	2.0	1.68	1.189	0.05	0.05= 1.98	0.05 असार्थक सार्थक
छात्राएं	50	31.0	7.73						

विश्लेषण

नवोदय विद्यालय के छात्रों की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि का मध्यमान 33.0 तथा मानक विचलन 8.04 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार नवोदय विद्यालय के छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि का मध्यमान 31.0 तथा मानक विचलन 7.73 प्राप्त हुआ ।

नवोदय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के मध्यमानो के बीच 2.0 अंक का अंतर पाया गया तथा टी मूल्य ज्ञात करने पर 1.189 प्राप्त होता है। अतः नवोदय विद्यालय के छात्र छात्राओं में

कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया। क्योकि लिंग के आधार पर कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति कोई अंतर नही पाया गया।

तालिका – 4

रा0मा0 एवं नवोदय वि0 के विद्यार्थियो के मध्यमान,मानक विचलन एवं टी मूल्य का विवरण

छात्रा छात्र एवं न्यादर्शी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानो का अंतर अन्तर	मानक त्रुटि	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर	सारणीयन मान	परिणाम
राजकीय मा. वि. के छात्र छात्राए एवं छात्राओं	100	32.0	7.88	3.0	1.04	2.88	0.05	1.98	0.05 पर सार्थक
नवोदय वि. के छात्र एवं छात्राएं छात्राओं	100	29.0	6.91						

सारणी सं. 4 के अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि राजकीय मा0 वि0 के छात्र एवं छात्राओं की कुल संख्या 100 तथा मध्यमान 32.0 तथा मानक विचलन 7.88 पाया गया इसी प्रकार नवोदय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की कुल संख्या 100 तथा मध्यमान 29.0 एवं मानक विचलन 6.91 पाया गया तथा नवोदय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं के मध्य टी मूल्य का मान 2.88 प्राप्त हुआ जबकि सारणीमान 005 सार्थकता स्तर पर 1. 98 पाया गया जो कि 0.5 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर बताता है।

शोध के निष्कर्ष

1. राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति पायी जाने वाली अभिरूचि में तुलनात्मक दृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।
2. नवोदय विद्यालय के छात्र–छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति पायी जाने वाली अभिरूचि में तुलनात्मक दृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

राजकीय मा0 विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति पायी जाने वाली अभिरूचि में तुलनात्मक दृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध कार्य समय एवं उपलब्ध साधनों के आधार पर अनुसंधानकर्ता के कम जनसंख्या पर अपने न्यादर्श का चुनाव किया है।

जिससे प्राप्त परिणाम को सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए उपयुक्त नहीं अतः इसे और अधिक जनसंख्या पर अध्ययन करने की आवश्यकता पर ध्यान दिया जा सकता है।

1. अनुसंधानकर्ता ने केवल करौली एवं दौसा (राजस्थान) जिले का अध्ययन किया है अतः इस विषय पर अन्य जिलो एवं क्षेत्रो में अध्ययन किया जा सकता है ताकि विश्वसनीय एवं सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले निष्कर्ष प्राप्त हो सके।
2. प्रस्तुत शोध एक छोटे न्यादर्श (200) छात्र–छात्राओं पर आधारित है जो सम्पूर्ण जनसंख्या का अच्छी तरह प्रतिनधित्व नहीं करते। अतः इस विषय पर एक बड़े न्यादर्श पर अध्ययन किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध में अध्ययनकर्ता ने माध्यमिक स्तर के केवल कक्षा 10 के छात्र–छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि को जानने प्रयास किया है।
4. अनुमानित तथा गैर अनुमानित विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि का अध्ययन किया जा सकता है।
5. आदिवासी एवं गैर आदिवासी जाति के छात्र–छात्राओं के कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

शोध अध्ययन का महत्व

आज का युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग है। वर्तमान समय में यदि व्यक्ति को वैज्ञानिक, औद्योगिक एवं तकनीकी रूप सेसम्पन्न होना है तो उसे कम्प्यूटर की जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है। शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में पाया कि रा0मा0 विद्यालय के छात्र छात्राओं में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नही है उनकी कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिरूचि में सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया जिसका परिणाम उनके अपने व्यावसायिक एवं शैक्षणिक क्षेत्रो में प्रगति से प्रदर्शित होता है जबकि नवोदय विद्यालय के छात्र छात्राओं में कम्प्यूटर शिक्षा के अभिरूचि के प्रति रा0मा0वि0 के छात्र छात्राओं की अपेक्षा कम उत्साह प्रतीत होता है जिसका परिणाम उनके शैक्षिक एवं व्यावसायिक उपलब्धि पर पडता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *मित्तल, संतोष (2008) शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा कक्ष प्रबन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रथ अकादमी जयपुर।पृष्ठ सं0 309।*
2. *कौल, लौकेश (2007) शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिग हाउस, नोएडा।पृष्ठ सं0 459।*
3. *राय, पारसनाथ (2005) अनुसंधान परिचय,दशम संस्करण आगरा प्रकाशन आगरा। पृष्ठ सं0 124।*
4. *गुप्ता,एस.पी. (2008) सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।पृष्ठ सं0 502।*
5. *मगल,एस.के. (2013) शिक्षा मनोविज्ञान,पी.एच.आई लर्निंग,नई दिल्ली। पृष्ठ सं0 420*
6. *wikipidia.org*
7. *http:sodhganga.inflibnet.ac.in*